UNIT First

"भारत एक बहुआबादी वाला राष्ट्र है। यहाँ अनेक स्तरों पर विविधता प्राप्त होती है। भारतीय आबादी का लगभग आधा हिस्सा जिसे आँधी आबादी के नाम से भी जाना जाता है, स्त्रियों की है। लेकिन स्वतंत्रता के बाद भी यह अत्यन्त हेय विषय है कि स्त्रियों को अभी भी समाज में बराबरी का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है।

प्रारम्भ में ही स्त्री को दया और विनम्रता की प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित किया गया है।

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित प्रसिद्ध काव्य 'यशोधरा' में कहा है —

"अबला जीवन हाय तुम्हारी, यही कहानी
आँचल में दूध और आँखों में पानी"

लेकिन वर्तमान में आवश्यकता है कि लिंगीय भेदभाव को समाप्त कर स्त्रियों की स्थिति में सुधार किया जाना चाहिए।

Important Calls ✓ | Things to Do ✓ | Meetings ✓

लिंग का अर्थ (Meaning of Gender)

मनुष्य दो रूपों में जन्म लेता है स्त्री और पुरुष जिसे प्रारम्भिक अवस्था में बालिका तथा बालक कहा जाता है। "लिंग" को व्याकरण में यह कहकर परिभाषित किया गया है कि- जिससे किसी के स्त्री या पुरुष होने का बोध हो उसे लिंग कहते हैं।

Gender- "Gender shows that a Noun or a Pronoun is male or female."

लिंगीय विभेद से तात्पर्य (Meaning of Gendered Bias) Distinction

23 Sunday

लिंगीय विभेद से तात्पर्य बालक तथा बालिकाओं के मध्य व्याप्त लैंगिक असमानता। प्राचीन काल से ही यह अवधारणा प्रचलित रही है कि जीवित पुत्र का मुख देखने मात्र से ही नरक और कई प्रकार के पापों से मुक्ति मिल जाती है

Important Calls ✓

Things to Do ✓

Meetings ✓

और बालिकाओं की प्रत्येक प्रकार से सुरक्षा करनी पड़ती है। अतः बालक श्रेष्ठ है और कुल का गौरव तथा कुल का नाम आगे ले जाने और रोशन करने के लिए उत्तरदायी होने के कारण ही बालिकाओं की अपेक्षा प्रमुख है। इस प्रकार "लिंग के आधार पर किया जाने वाला भेद-भाव लिंगीय विभेद कहलाता है"।

(लिंगीय विभेद के कारण)
(Reasons of Gender Bias (Discrimination))

लिंगीय विभेद आज ही नहीं, प्राचीन काल से चला आ रहा है और यह विभेद भारत ही नहीं, विश्व के कई देशों में चला आ रहा है।

विभेद कई प्रकार के होते हैं, जिनमें कुछ निम्न प्रकार हैं।

1. जातिगत विभेद
2. प्रजातीय विभेद
3. लिंगीय विभेद
4. भाषायी विभेद
5. रंगत विभेद
6. सांस्कृतिक विभेद
7. आर्थिक विभेद
8. स्थानगत विभेद

Important Calls	✓	Things to Do	✓	Meetings	✓
	☐		☐		☐
	☐		☐		☐
	☐		☐		☐

उपर्युक्त सभी विभेद मानवता के लिए खतरा है। मनुष्य की एकता की स्थापना में ये सभी प्रकार के विभेद बाधक है। लेकिन लिंगीय विभेद के कारण बालिकाओं को भ्रूणावस्था में ही समाप्त कर दिया जाता है। तथा जन्म के बाद भी बालिकाओं को आजीवन लैंगिक विभेद का सामना करना पड़ता है।

UNESCO की Report के अनुसार —

भारतवर्ष में प्रत्येक वर्ष एक करोड़ तीस लाख कन्या भ्रूणों की हत्या कर दी जाती है। इसी से हम अनुमान लगा सकते है कि लिंगीय विभेद कितनी भयावह अवस्था मे पहुँच चुका है।

(1) मान्यताएँ तथा परम्पराएँ Beliefs & Tradition

लिंगीय विभेद का एक प्रमुख कारण भारतीय मान्यताओं तथा परम्पराओं का है। यहाँ जीवित पुत्र का मुख देखने से पुण्य नामक नरक से मुक्ति का वर्णन तथा श्राद्ध और पिण्डादि कार्य पुत्र के हाथ से

Important Calls	✓	Things to Do	✓	Meetings	✓
	☐		☐		☐
	☐		☐		☐
	☐		☐		☐

सम्पन्न कराने की मान्यता रही है। स्त्रियों को चिता को अग्नि देने का अधिकार भी नहीं दिया गया है, जिसके कारण भी पुत्र को महत्व दिया जाता है, और वंश को चलाने में भी पुरुष को ही प्रधान माना गया है।

इन मान्यताओं तथा परम्पराओं की बेड़ियों में हमारा भारतीय जनमानस चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित पूरी तरह से आबद्ध है, जिसके परिणाम स्वरूप बालकों को महत्व दिया जाता है और कहीं-कहीं तो बालिकाओं को गर्भ में ही हत्या कर दी जाती है।

अथर्ववेद — इस वेद वर्णित आया है कि स्त्री को बाल्यकाल में पिता के अधीन, युवावस्था में पति के अधीन वृद्धावस्था में पुत्र के अधीन रहना चाहिए इस प्रकार स्त्रियों को अस्तित्व मान्यताओं, परम्पराओं और सुरक्षा की बलि चढ़ा दिया जाता है।

Important Calls	✓	Things to Do	✓	Meetings	✓
	☐		☐		☐
	☐		☐		☐
	☐		☐		☐

(2) संकीर्ण विचारधारा (Narrow Ideology)

बालक - बालिका में भेद का एक कारण लोगों की संकीर्ण (निम्न) विचारधारा है। लड़के माता-पिता के बुढ़ापे का सहारा बनेंगे। वंश चलायेंगे, उन्हें पढ़ा-लिखाकर घर की उन्नति होगी।

वहीं लड़की के पैदा होने पर शोक का माहौल होता है। क्यों कि उसके लिए दहेज देना होगा। विवाह के लिये वर ढूंढना होगा और तब तक सुरक्षा प्रदान करनी होगी तथा पढ़ाने लिखाने में पैसा खर्च करना होगा लोग बर्बादी समझते हैं।

वर्तमान में बालिकाओं ने उस संकीर्ण सोच और मिथकों को तोड़ने का कार्य किया है फिर भी बालिकाओं का कार्यक्षेत्र चूल्हे-चौके तक ही सीमित माना जाता है उनकी भागीदारी को स्वीकार नहीं किए जाने के कारण बालकों की अपेक्षा बालिकाये का महत्व कम आँका जाता है। जिससे लिंगीय भेद-भाव में वृद्धि होती है।

Important Calls ✓ | Things to Do ✓ | Meetings ✓

③ जागरूकता का अभाव (Lack of awareness)

जागरूकता के अभाव के कारण भी लैंगिक भेद-भाव उपजता है समाज में अभी भी लैंगिक मुद्दों पर जागरूकता की कमी है, जिसके कारण बालक-बालिकाओं की देख-रेख शिक्षा तथा पोषणादि स्तरों पर भेद-भाव किया जाता है। वहीं जागरूक समाज में "बेटा-बेटी एक समान" के मंत्र का नकल करते हुए बेटियों का पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा स्त्रियों की भाँति प्रदान की जाती है।

लैंगिक भेद-भाव के कारण बालिकाओं के विकास का उचित प्रबन्ध नहीं किया जाता है। परिणामतः आर्थिक क्षेत्र में उनकी भागीदारी सुनिश्चित नहीं होने से उनके प्रति लोगों के नजरिये में भी परिवर्तन नहीं होता और वे सदैव स्वयं को लड़कों से हीन मान बैठती है। इसलिए बालकों को बालिकाओं की अपेक्षा अधिक महत्व प्रदान किया जाता है।

(5) अशिक्षा Illiteracy (निरक्षरता)

लैंगिक विभेद में अशिक्षा की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। अशिक्षित व्यक्ति परिवार तथा समाज में चले आ रहे मिथकों और अन्धविश्वासों पर ही लोग कायम रहते हैं तथा बिना सोचे समझे उनका पालन करते रहते हैं।
यदि लड़कियों को समुचित प्रोत्साहन और अवसर प्रदान किये जायें तो वे प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर सकती हैं।

शिक्षित व्यक्ति यह चिन्तन करता है कि यदि स्त्रियाँ नहीं होंगी तो माँ, बहन, बेटी और पत्नी का अस्तित्व ही नहीं होगा। और शिक्षित व्यक्ति यह भी नित्य प्रति देखता है और अनुभव करता है कि स्त्रियाँ किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं। वे उनसे कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं। इस प्रकार लैंगिक विभेद अशिक्षा और अज्ञानता के परिणामस्वरूप भी होते हैं।

"निरक्षरता" का अर्थ है किसी विशिष्ट विषय में अज्ञानता या ज्ञान की कमी। Exp- एक व्यक्ति स्कूल जाता है लेकिन Computer को संचालित करने के बारे में वह नहीं जानता है- ऐसे व्यक्ति के पास Computer में कोई साक्षरता नहीं है और Computer शिक्षा में वह अशिक्षित माना जाता है।

Important Calls Things to Do Meetings